संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ६ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ जुलाई २०२१
वर्ष : ३१ अंक : १ (निरंतर अंक : ३४३)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

गुरुपूर्णिमा विशेषांक

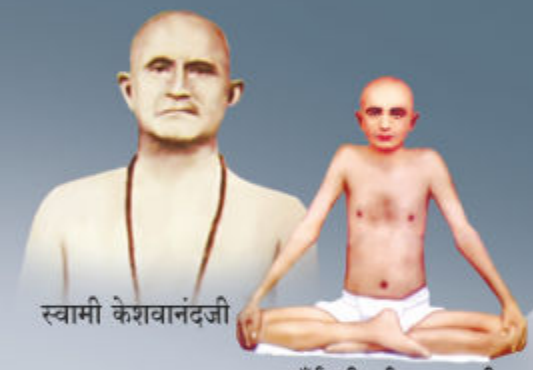

स्वामी केशवानंदजी

साँईं श्री लीलाशाहजी

भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज

संत श्री आशारामजी बापू

संत पीपाजी

संत रामानंदजी

सत्शिष्यों के जीवन से जानें

कैसे पायें पूर्ण गुरुकृपा

पढ़ें पृष्ठ ६

सद्गुरुओं की युक्ति से शीघ्र मुक्ति होती है। जो इस युक्ति का अवलम्बन लेते हैं वे सत्शिष्य जीते-जी परमानंदस्वरूप को प्राप्त कर लेते हैं। आइये, ऐसे सत्शिष्यों एवं सद्गुरुओं के जीवन से हम वह युक्ति चुरा लें !

श्री गोंदवलेकरजी महाराज

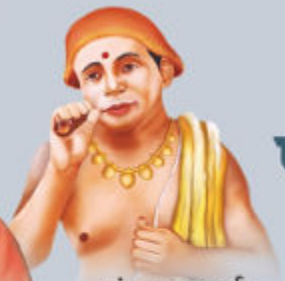

संत तुकामाई

श्री नित्यानंदजी महाराज

स्वामी मुक्तानंदजी

श्री सिद्धरामेश्वर महाराज

श्री निसर्गदत्त महाराज

ऋषि प्रसाद सेवाधारियों को पूज्य बापूजी का अनमोल प्रसाद

ऋषि प्रसाद ३२वीं जयंती वर्ष २०२१

ऋषि प्रसाद जयंती : २३ जुलाई १७

बापूजी के साथ अन्याय कब तक ? - संत समाज २७

खून की कमी (anaemia) कैसे दूर करें ? ३०

आशारामजी बापू को तत्काल न्यायिक राहत दी जाय

- पैट्रिक ब्राउन, मेयर, सिटी ऑफ ब्रैम्पटन, कनाडा २७

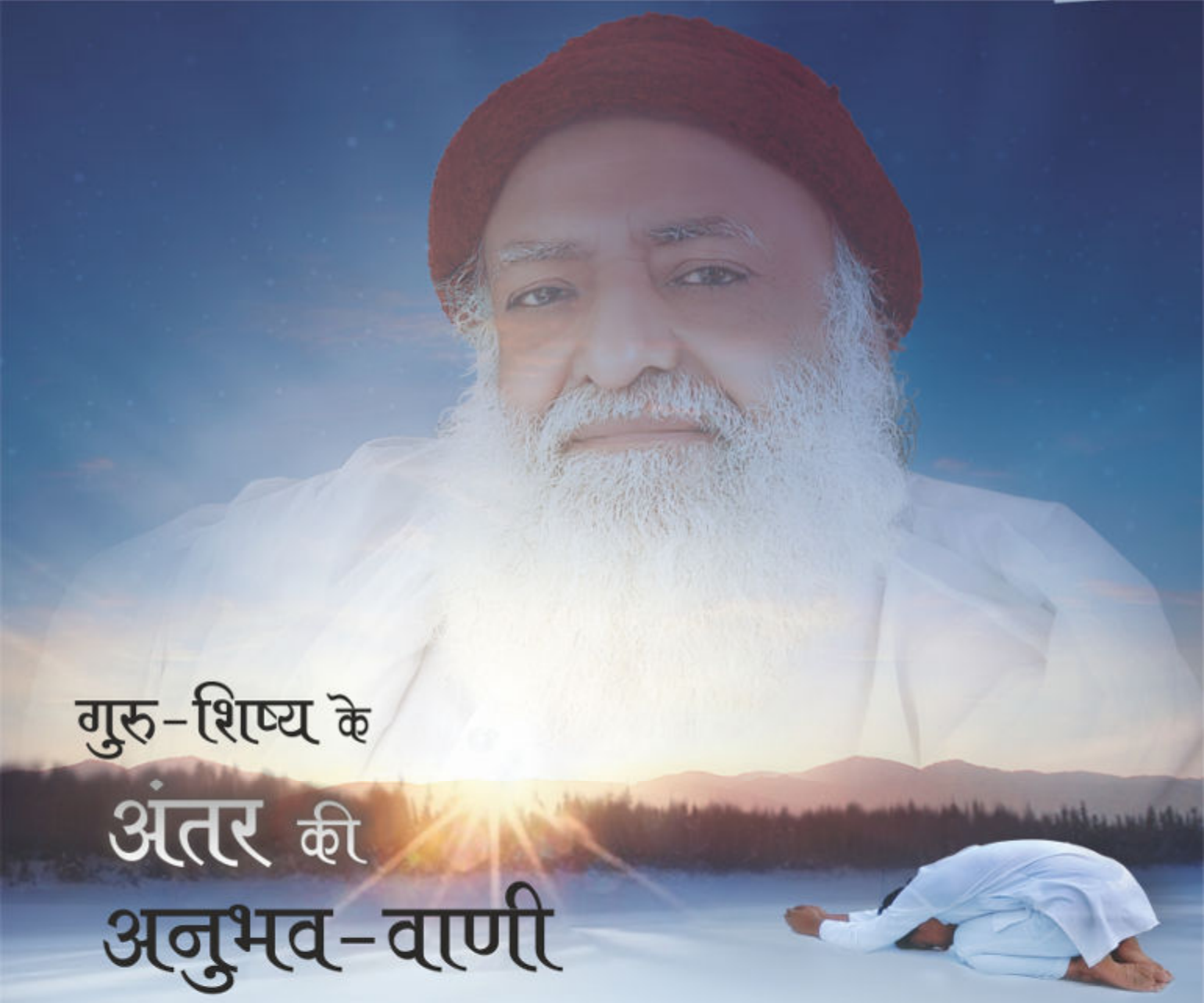

गुरु-शिष्य के अंतर की अनुभव-वाणी

परमात्मज्ञान में तृप्त एक ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु अपने शिष्य पर अहैतुकी कृपा बरसाते हुए गुरु-शिष्य के शाश्वत संबंध तथा विशुद्ध प्रेम का दुर्लभ रहस्य समझाते हुए कहते हैं : ''वत्स ! मैं सर्वदा तुम्हारे साथ हूँ। हम दोनों परमात्मा में एक हैं। मैं तुम्हारे सब भावों को जानता हूँ। तुम मेरे अनुभव को जितना ही अधिक अपने में आकर्षित करोगे, उतनी ही हम दोनों में दैवी एकता बढ़ेगी। यह आत्मिक जीवन है। गुरु-शिष्य का संबंध इतना घनिष्ठ है कि मृत्यु और वियोग भी इसमें बाधक नहीं है। शिष्यत्व मेरे भौतिक रूप को देखने में नहीं, मेरे उद्देश्य को समझने में है। हम लोगों में अपरिमित प्रेम है। गुरु और शिष्य का संबंध सर्वथा अभेद्य है।''

गुरुदेव की सच्चिदानंदमयी अद्वितीय वाणी सुनकर शिष्य का हृदय कृतज्ञता से भर गया। उसके अंतर की भावधारा प्रस्फुटित हुई : ''हे अनिर्वचनीय कैवल्य पद के परम भाव गुरुदेव ! मैं गुरु एवं ईश्वर के रूप में आपका अभिनंदन करता हूँ। आपके वचन महामोह (अज्ञान) रूपी घने अंधकार का नाश करने के लिए सूर्यकिरणों के समूह हैं। वे जिसके हृदय में आ जाते हैं उसके बड़े भाग्य हैं। उसीको आपके शुभाशीर्वाद तथा सर्वव्यापी प्रेम प्राप्त हैं। मेरे स्वामिन् ! आपके इन शब्दों को सुनकर मुझे गुरुदेव और शिष्य के बीच का सच्चा संबंध ज्ञात हुआ है। हे अनुग्रह-विग्रह ! आपने अपनी कृपा से मुझे अंधकार में से उठा लिया है। मैं सर्वथा कुछ नहीं था। आपने उस स्थिति से उठाकर जैसा मैं हूँ वैसा बना दिया है। हे ईश्वर ! आपकी कृपा अनंत है। मेरे प्रति आपका प्रेम अवर्णनीय है। आपका अपने शिष्य के प्रति स्नेह जननी के पुत्र के प्रति स्नेह से अनंत गुना अधिक है। आपकी कृपा, आपका धैर्य, आपकी मधुरता अनंत है। हे भगवन् ! मैं आपकी स्तुति करता हूँ। मैं आपको अपना सर्वस्व - शुभ-अशुभ, भूत-भविष्य-वर्तमान समर्पित करता हूँ। अपने हृदय के अतिरिक्त मेरा दूसरा घर न होने दें। हे गुरुदेव ! आप मेरे जीवन के परम आश्रय, प्रेरक, संचालक, निर्वाहक एवं एकमात्र उद्देश्य हैं। आप मेरे जीवन-सर्वस्व हैं। मेरे आपको बारम्बार, अनेकानेक, नतमस्तक व करबद्ध होकर हार्दिक प्रणाम हैं !''

ऋषि प्रसाद

हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : ३१ अंक : १ मूल्य : ₹ ६
भाषा : हिन्दी निरंतर अंक : ३४३
प्रकाशन दिनांक : १ जुलाई २०२१
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
आषाढ़-श्रावण वि.सं. २०७८

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : धर्मेश जगराम सिंह चौहान
मुद्रक : राघवेन्द्र सुभाषचन्द्र गादा
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पाँटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ('हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactureres) के नाम अहमदाबाद में देय) द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**

सम्पर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)

फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
७९६१२१०७१४ 'Rishi Prasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में

अवधि	हिन्दी व अन्य	अंग्रेजी
वार्षिक	₹ ६५	₹ ७०
द्विवार्षिक	₹ १२०	₹ १३५
पंचवार्षिक	₹ २५०	₹ ३२५
आजीवन (१२ वर्ष)	₹ ६००	---

विदेशों में (सभी भाषाएँ)

अवधि	सार्क देश	अन्य देश
वार्षिक	₹ ६००	US $ 20
द्विवार्षिक	₹ १२००	US $ 40
पंचवार्षिक	₹ ३०००	US $ 80

Opinions expressed in this publication are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

इस 'गुरुपूर्णिमा विशेषांक' में...

❖ **गुरुपूर्णिमा** ४
✲ गुरु-तत्त्व में अडिग रहने के नये प्रयोग, नयी दिशा देनेवाला महापर्व
❖ **सत्शिष्यों के जीवन से जानें कैसे पायें पूर्ण गुरुकृपा** ६
❖ **...यह संस्कृति मनुष्य को कितना ऊँचा उठा सकती है !** १०
❖ **उपासना अमृत** ११
✲ जीवन को प्रेमाभक्ति, ज्ञान व माधुर्य से भरने का अवसर
❖ **भगवद्-बल की प्राप्ति का उपाय** १२
❖ **काव्य गुंजन** ✲ ...सतगुरु-चरण सनेह बिना रे - संत कबीरजी १२
✲ गुरुजन जगाते हैं उठो जीव जागो - संत पथिकजी २१
❖ **पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग** ✲ रूपाभाई को भावपूर्ण प्रेमांजलि व पूज्य बापूजी से जुड़े उनके कुछ मधुर संस्मरण १३
❖ **योग-वेदांत-सेवा** ✲ जितनी जिम्मेदारी और तत्परता, उतना विकास १६
❖ **ऋषि ज्ञान प्रसाद** १७
✲ इस प्रसाद के आगे करोड़ रुपये की भी कीमत नहीं
❖ **विद्यार्थी संस्कार** ✲ ...तो तेरा जीवन-रथ ठीक चलेगा १८
✲ ...तो हर बच्चा महान बन सकता है
❖ **तेजस्वी युवा** ✲ अविश्वास की सजा ! २०
❖ **महिला उत्थान** ✲ संत की युक्ति से भगवदाकार वृत्ति... २१
❖ **संस्कृति विज्ञान** ✲ आरती में कपूर का उपयोग क्यों ? २२
❖ **तत्त्व दर्शन** ✲ देहत्रय-साक्षी विवेक २३
❖ **...इसीका नाम मोक्ष है** २४
❖ **मृतक की सच्ची सेवा** २५
❖ **संतों की हितभरी अनुभव-वाणी** २६
❖ **आप कहते हैं...** ✲ आशारामजी बापू के साथ अन्याय कब तक ? २७
✲ आशारामजी बापू को तत्काल न्यायिक राहत दी जाय
❖ **जीवन जीने की कला** ✲ ध्यान में उपयोगी महत्त्वपूर्ण १२ योग २८
❖ **भक्तों के अनुभव** २९
✲ दृष्टि पड़नेमात्र से मिली जीवन को सही दिशा - महादेव एकड़े
❖ **शरीर स्वास्थ्य** ✲ खून की कमी (रक्ताल्पता) कैसे दूर करें ? ३०
✲ त्रिदोषशामक त्रिफला रसायन ✲ अभागे 'आलू' से सावधान !
✲ रक्ताल्पता में उत्तम लाभ देनेवाले उत्पाद
❖ **अनमोल कुंजियाँ** ✲ कालसर्पयोग दूर करने का उपाय ३३
✲ सत्संग की उन्नतिकारक कुंजियाँ
✲ क्रोध से हानियाँ और उससे बचने के उपाय
❖ **परिप्रश्नेन...** ✲ भय लगे तो क्या करें ? ३४

विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग सेवाकार्य

DIGIANA DIVYA JYOTI — रोज रात्रि १० बजे
अराधना — रोज सुबह ७:३० व रात्रि ८:३० बजे
मंगलमय इंटरनेट चैनल ashram.org/live
Asharamji Bapu | Asharamji Ashram — आश्रम के आधिकारिक यूट्यूब चैनल्स

✲ 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। ✲ 'अराधना' चैनल जम्मू में JK Cable पर उपलब्ध है।

Download Rishi Prasad, Rishi Darshan & Mangalmay Digital Apps

होगी, बहुत लाभ होगा।

(३) सत्संग-श्रवण का नियम : एक और **खास आज्ञा है कि रोज सत्संग करना।** फिर चाहे १ घंटा, आधा घंटा, १५ मिनट करो... नहीं तो चौथाई घड़ी अर्थात् ६ मिनट तो जरूर करना।

एक सत्संग होता है आमने-सामने (ब्रह्मवेत्ता महापुरुष के प्रत्यक्ष सान्निध्य में), दूसरा होता है ब्रह्मवेत्ता संतों के अनुभवों के वचन जिन ग्रंथों, पवित्र पुस्तकों में हैं उनका स्वाध्याय अथवा ऑडियो-विडियो माध्यमों से सत्संग। यह तो तुम कर सकते हो; चाहे रेलगाड़ी में हो, चाहे ससुराल या मायके में हो, चाहे नौकरी पर हो। फिर ६ मिनट की जगह ७ या १५ मिनट करोगे तो और अच्छा है। एक बार पढ़ा या सुना, फिर से उसीको पढ़ो या सुनो तो कुछ और रहस्य खुलेंगे। ४ बार पढ़ा-सुना लेकिन अब ५वीं बार पढ़ा-सुना तो कुछ-न-कुछ ऐसा प्रकाश वह तुम्हारे हृदय को देगा कि तुम ऊँचे उठते जाओगे।

इन बातों को ठीक से अपना बना लो, मनन कर लो। **जैसे मेरे गुरुदेव का प्रसाद मेरे दिल में ठहर गया, ऐसे ही वेदव्यासजी और मेरे गुरुदेव का वही प्रसाद आपके दिल में ठहर जाय तो मेरा काम हो गया।** ❐

जोधपुर राखियाँ न भेजें

– पूज्य बापूजी

भगवान और संत भाव के भूखे हैं अतः मन-ही-मन राखी अर्पण करके मन से बाँध देना, पुण्यमय भाव लाना। यहाँ सारी राखियाँ मेरे तक नहीं पहुँच पाती हैं। यदि राखियाँ नहीं भेजेंगे तो आज्ञा मानने का पुण्य होगा और अगर भेजेंगे तो आज्ञा का उल्लंघन करके भेजेंगे इसलिए अवज्ञा करने का भी दोष होगा।

सत्शिष्यों के जीवन से जानें कैसे पायें पूर्ण गुरुकृपा

सद्गुरुओं की युक्ति से शीघ्र मुक्ति होती है। उन्हें रिझाकर पूर्ण गुरुकृपा प्राप्त करने की यह कुंजी उनके सत्संग, सत्शास्त्रों एवं उनके जीवन-चरित्रों से ज्ञात होती है। जो इस युक्ति का अवलम्बन लेते हैं वे सत्शिष्य जीते-जी परमानंदस्वरूप को, मोक्ष को प्राप्त कर लेते हैं। आइये, ऐसे सत्शिष्यों एवं सद्गुरुओं के जीवन से हम वह युक्ति चुरा लें और तीव्र गति से परमात्मप्राप्ति के पथ पर आगे बढ़ें। सद्गुरु और सत्शिष्यों की गरिमामयी विशाल परम्परा में से प्रस्तुत हैं कुछ उदाहरण :

श्री नित्यानंदजी के सत्शिष्य श्री मुक्तानंदजी

स्वामी मुक्तानंदजी कहते हैं : ''भगवान श्री

नित्यानंद ने साधना में मेरी बहुत सहायता की, विशेषकर मेरे अहं को कुचलने में। उनके द्वारा मेरी अनेक कसौटियाँ ली गयीं पर मैंने कभी उनकी गलती देखनी नहीं शुरू की, मैं तो अपनी बुराइयों को देखता था। मैं यह समझता था कि केवल गुरु ही जानते हैं कि शिष्य पर कैसे कार्य करना है। गुरु के साथ रहना कठिन है परंतु यदि शिष्य ऐसा कर ले तो वह स्वयं गुरु बन जायेगा।

उल्लसित गुरु-चिंतन, गुरु के पुण्य-स्मरण, गुरु-संगत, गुरुसेवा, गुरुआज्ञा-पालन - यही सिद्धमार्ग है, इसी पर चलते हुए

...तो तेरा जीवन-रथ ठीक चलेगा

- पूज्य बापूजी

एक नया-नया चेला शास्त्र पढ़ रहा था, गुरु लेटे-लेटे सुन रहे थे । गुरु गुरु थे (ब्रह्मवेत्ता सद्गुरु थे) ।

तन तस्बीह मन मणियों, दिल दंबूरो जिन
से सुता ई सूंहनि, निंड इबादत जिन जी.
तंदूं जे तलब जूं, से वहदत सुर वजनि

जिनका तन माला हो गया, मन मनका हो गया और जिनका हृदय वीणा का तार बन गया, ऐसे पुरुष बैठे हैं तो क्या, लेटे हैं तो क्या, उनकी तलब (चाहत) के तार ईश्वरीय आलाप आलापते हैं । ऐसे पुरुषों के दर्शनमात्र से हमारे पाप-ताप कटते हैं, हृदय पवित्र होता है । धंधा-नौकरी तो जिंदगीभर होता रहता है, असली धंधा तो ऐसे सद्गुरुओं के साथ कभी-कभी होता है ।

तो चेला पढ़ रहा था और घड़ी भी देख रहा था कि 'अब महाराज मौन हों तो हम जायें । महाराज कहें कि 'भई ! बंद करो' तो हम खिसक जायें ।'

गुरु लेटे थे लेकिन गुरु का हृदय तो वही गुरु (अंतर्यामी, सर्वसाक्षी) था । चेला ने पढ़ने में जल्दबाजी की तो गुरु ने कहा : ''देख बेटा ! एक शब्द छूट गया है ।''

''गुरुजी ! कौन-सा शब्द छूट गया है ?''

''जो तू है वही शब्द छूट गया है ।''

''गुरुजी ! समझ में नहीं आया ।''

''पन्ना फिर उलटा दे । फिर से पढ़, जो तू है वह शब्द छूट गया ।''

उसने पढ़ा तो देखा कि 'उल्लू' शब्द छूट गया था ।

गुरु बोले : ''तू उल्लू है ! जैसे उल्लू को सूरज नहीं दिखता है ऐसे ही तेरे को अपना कल्याण नहीं दिखता है । सत्संग में कितना कल्याण होता है, संत के वचन सुनने से, हरि के लिए कुछ समय निकालने से कितना कल्याण होता है वह तू नहीं जानता । पेट के लिए तो सारी जिंदगी निकाली और दो घड़ी तू हरि के लिए नहीं निकालेगा तो तेरा और तेरे कुल में आनेवालों का क्या होगा !''

''गुरुदेव ! माफ कीजिये !''

''मैं तो बेटा माफ करूँ पर तू अपने को माफ कर, अपना दुश्मन मत बन । चौसर और ताश खेलने में समय गँवाता है, फिल्म देखने और गपशप लगाने में समय गँवाता है और जब से शादी हुई तब से रात को चमड़ा चाटने में कितने घंटे चले गये उसके लिए तो कभी घड़ी नहीं देखी और अभी सत्संग में तेरी इक्कीस पीढ़ियाँ तर रही हैं तो तू घड़ी देख रहा है ! तो फिर तू उल्लू नहीं तो और क्या है ?''

मनुष्य था, आखिर संत के दर्शन का पुण्य था, उसने कहा : ''गुरुजी ! माफ कीजिये, ऐसी गलती दोबारा नहीं करूँगा ।''

...इसीका नाम मोक्ष है

हिमालय की तराई में एक ब्रह्मनिष्ठ संत रहते थे। वहाँ का एक पहाड़ी राजा जो धर्मात्मा, नीतिवान और मुमुक्षु था, उनका शिष्य हो गया और संत के पास आकर उनसे वेदांत-श्रवण किया करता था। एक बार उसके मन में एक शंका उत्पन्न हुई। उसने संत से कहा : ''गुरुदेव ! माया अनादि है तो उसका नाश होना किस प्रकार सम्भावित है ? और माया का नाश न होगा तो जीव का मोक्ष किस प्रकार होगा ?''

संत ने कहा : ''तेरा प्रश्न गम्भीर है।'' राजा अपने प्रश्न का उत्तर पाने को उत्सुक था।

वहाँ के पहाड़ में एक बहुत पुरानी, कुदरती बड़ी गुफा थी। उसके समीप एक मंदिर था। पहाड़ी लोग उस मंदिर में पूजा और मनौती आदि किया करते थे। पत्थर की चट्टानों से स्वाभाविक ही बने होने से वह स्थान विकट और अंधकारमय था एवं अत्यंत भयंकर मालूम पड़ता था।

संत ने मजदूर लगवाकर उस गुफा को सुरंग लगवा के खुदवाना आरम्भ किया। जब चट्टानों का आवरण हट गया तब सूर्य का प्रकाश स्वाभाविक रीति से उस स्थान में पहुँचने लगा।

संत ने राजा को कहा : ''बता, यह गुफा कब की थी ?''

राजा : ''गुरुदेव ! बहुत प्राचीन थी, लोग इसको 'अनादि गुफा' कहा करते थे।''

''तू इसको अनादि मानता था या नहीं ?''

''हाँ, अनादि थी।''

''अब रही या न रही ?''

''अब नहीं रही।''

''क्यों ?''

''जिन चट्टानों से वह घिरी थी उनके टूट जाने से गुफा न रही।''

''गुफा का अंधकार भी तो अनादि था, वह क्यों न रहा ?''

राजा : ''आड़ निकल जाने से सूर्य का प्रकाश जाने लगा और इससे अंधकार भी न रहा।''

संत : ''तब तेरे प्रश्न का ठीक उत्तर मिल गया। माया अनादि है, अंधकारस्वरूप है किंतु जिस आवरण से अँधेरेवाली है उस आवरण के टूट जाने से वह नहीं रहती।

जिस प्रकार अनादि कल्पित अँधेरा कुदरती गुफा में था उसी प्रकार कल्पित अज्ञान जीव में है। जीवभाव अनादि होते हुए भी अज्ञान से है। अज्ञान आवरण रूप में है इसलिए अलुप्त परमात्मा का प्रकाश होते हुए भी उसमें नहीं पहुँचता है।''

जब राजा गुरु-उपदेश द्वारा उस अज्ञानरूपी आवरण को हटाने को तैयार हुआ और उसने अपने माने हुए भ्रांतिरूप बंधन को खो के वैराग्य धारण कर अज्ञान को मूलसहित नष्ट कर दिया, तब ज्ञानस्वरूप का प्रकाश यथार्थ रीति से होने लगा, यही गुफारूपी जीवभाव का मोक्ष हुआ।

माया अनादि होने पर भी कल्पित है इसलिए कल्पित भ्रांति का बाध (मिथ्यापन का निश्चय) होने से अज्ञान नहीं रह सकता और जब अज्ञान नहीं रहता तब अनादि अज्ञान में फँसे हुए →

आशारामजी बापू के साथ अन्याय कब तक ? - संत-समाज

आप कहते हैं...

निर्मल पीठाधीश्वर श्री महंत स्वामी ज्ञानदेव सिंहजी, अध्यक्ष, श्री पंचायती अखाड़ा निर्मल : जहाँ-जहाँ आदिवासी क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियाँ धर्मांतरण का अधिक काम कर रही थीं वहाँ-वहाँ बापूजी ने गुरुकुल, समितियाँ आदि स्थापित किये और गरीबों को अन्न, वस्त्र आदि जीवनोपयोगी सामग्री तथा उनके बच्चों को शिक्षा आदि हेतु सब प्रकार की सुविधाएँ दीं। मिशनरियों ने देखा कि बापू हमारी कार्य करने की गति को रोक रहे हैं तो उन्होंने उनको दबाने के लिए बहुत बड़ा षड्यंत्र खड़ा किया।

बापूजी से हम कई बार मिले हैं। उनकी बहुत अच्छी विचारधारा थी, है और रहेगी। यह तो उनको झूठा ही बदनाम कर दिया गया है।

स्वामी शंकरदेवजी, निर्मल अखाड़ा : आशारामजी बापू बहुत अच्छे संत हैं। उन्होंने हमारी संस्कृति को बचाने के अनेक उपाय किये हैं तथा संस्कृति का प्रचार किया है। उन्होंने गौशालाएँ खुलवायीं जिनमें ९ हजार गायों की सेवा हो रही है, यह साधारण तो नहीं है ! एक दिन ऐसा आयेगा कि लोग उनको समझेंगे कि कौन हैं आशाराम बापू ! जिस प्रकार उनके साथ अन्याय हो रहा है यह अच्छी बात नहीं है।

श्री श्री १०८ महामंडलेश्वर महंत जितेन्द्रदासजी : आशारामजी बापू के केस में साफ दिख रहा है कि षड्यंत्र करके उनको फँसाया गया। एक राज्य में उनको आरोपित किया जाता है, दूसरे राज्य दिल्ली में उन पर मुकदमा लिखा जाता है ! हम केन्द्र सरकार से माँग करते हैं कि बापूजी के मामले में सच्चाई को सामने लायें। बापू निर्दोष हैं, उनको बरी किया जाय।

(संकलक : धर्मेन्द्र गुप्ता) ❐

आशारामजी बापू को तत्काल न्यायिक राहत दी जाय

- पैट्रिक ब्राउन, मेयर, सिटी ऑफ ब्रैम्पटन, कनाडा

कनाडा में रह रहे संत श्री आशारामजी बापू के शिष्यों में उनके स्वास्थ्य को लेकर चिंता बढ़ती जा रही है। संत आशारामजी ने अपने पूरे जीवनकाल में पूरे भारत में निःस्वार्थ मानव-कल्याण के सेवाकार्य चलाये हैं। उनकी शिक्षाओं व मार्गदर्शन ने बहुतों की मदद की है और उनकी सुख-शांति की राह ने जरूरतमंदों को सहारा दिया है। भारत के युवाओं, बच्चों और आदिवासियों के कल्याण के लिए एवं महिला सशक्तीकरण हेतु आध्यात्मिक तथा और भी बहुत सारे कार्य जो उन्होंने किये हैं उनसे बहुत लोग लाभान्वित हुए हैं।

मैं संत श्री आशारामजी बापू को मानवीयता के आधार पर तत्काल न्यायिक राहत प्रदान करने में मदद हेतु औपचारिक अनुरोध कर रहा हूँ।

अभागे 'आलू' से सावधान !

'आलू रद्दी-से-रद्दी कंद है । इसका सेवन स्वास्थ्य के लिए हितकारी नहीं है । तले हुए आलू का सेवन तो बिल्कुल ही न करें । आलू का तेल व नमक के साथ संयोग विशेष हानिकारक है । जब अकाल पड़े, आपातकाल हो और खाने को कुछ न मिले तो आलू को आग में भूनकर केवल प्राण बचाने के लिए खायें ।''

- पूज्य बापूजी

आचार्य चरक ने सभी कंदों में आलू को सबसे अधिक अहितकर बताया है । आलू को तेल में तलने से वह विषतुल्य काम करता है । आधुनिक अनुसंधानों के अनुसार उच्च तापमान पर या अधिक समय तक आलू को तेल में तलने से उसमें स्वाभाविक ही एक्रिलामाइड का स्तर बढ़ता है, जो कैंसर-उत्पादक तत्त्व सिद्ध हुआ है । कुछ शोधकर्ताओं ने तले हुए आलू के अधिक सेवन से मृत्यु-दर में वृद्धि होती पायी । इसका सेवन मोटापा व मधुमेह (diabetes) का भी कारण बन सकता है।

हाल ही में सूरत आश्रम के हमारे गुरुभाई **रूपाभाई** का देहावसान हुआ तब पूज्यश्री ने उनके लिए कहा कि ''वह कर्मयोगी, बहादुर एवं आखिरी साँस तक निभानेवाला था, उसने ऊँचे लोक की प्राप्ति की ।'' ऐसे हमारे समाजहितैषी गुरुभाई रूपाभाई तथा राजूभाई दिलखुश, राजूभाई गोगड़, अशोकजी जाट एवं और भी कई भक्तों को अभागे आलू की वानगियों ने हमारे बीच से छीन लिया ।

आलू का भूलकर भी सेवन न करें । पहले के खाये हुए आलू का शरीर पर कुप्रभाव पड़ा हो तो उसे निकालने के लिए रात को ३-४ ग्राम त्रिफला चूर्ण★ या ३-४ त्रिफला टेबलेट★ पानी से लेना हितकारी रहेगा ।

पूज्य बापूजी को पहले फालसीपेरम मलेरिया हुआ था जो एलोपैथिक दवाओं से मिटा लेकिन उन दवाओं से ५ साइड इफेक्ट्स हुए तब पूज्यश्री ने भी त्रिफला रसायन बनवा के ४०-४० दिन का प्रयोग किया था । इससे ५ में से ४ साइड इफेक्ट्स - आँखों का तिरछापन, कानों का बहरापन, यकृत (liver) व गुर्दे (kidneys) की समस्या ये ठीक हुए । २०-२२ साल पुराना ट्राइजेमिनल न्यूराल्जिया, जिसे 'सुसाइड डिसीज' भी कहते हैं (इसकी भयंकर पीड़ा का विवरण इंटरनेट पर भी देख सकते हैं), वह भी त्रिफला रसायन से नियंत्रण में है । पूज्यश्री अब भी कभी-कभी त्रिफला लेते रहते हैं ।

(त्रिफला रसायन बनाने की विधि, सेवन-विधि आदि देखें पृष्ठ ३१ पर) ❑

रक्ताल्पता में उत्तम लाभ देनेवाले उत्पाद

(१) रजत मालती : १ से २ गोली सुबह खाली पेट दूध से लें ।

(२) आँवला-चुकंदर शरबत★ : १५ से २० मि.ली. शरबत २०० मि.ली. गुनगुने पानी में मिलाकर खाली पेट लें ।

(३) द्राक्षावलेह : १-१ चम्मच दिन में २ बार भोजन के साथ लें ।

(४) आँवला रस : १० से २० मि.ली. सुबह-शाम खाली पेट लें ।

(५) घृतकुमारी रस (Aloe vera Juice)★ : ४ चम्मच सुबह खाली पेट लें । शाम को भोजन से १-२ घंटे पहले भी ले सकते हैं ।

★ ये संत श्री आशारामजी आश्रम में व समितियों के सेवाकेन्द्रों से प्राप्त हो सकते हैं ।

रक्षाबंधन हेतु वैदिक रक्षासूत्र

शुभ भाव तथा रक्षा के शुभ संकल्प से सँजोया हुआ रक्षासूत्र यदि वैदिक रीति से बना हो तथा वैदिक मंत्रोच्चारण व भगवद्भाव सहित बाँधा जाय तो उसका सामर्थ्य असीम हो जाता है। प्रतिवर्ष के अनुसार इस वर्ष भी महिला उत्थान मंडल द्वारा दूर्वा, अक्षत, सरसों, कुमकुम और हल्दी - इन पाँच चीजों के मिश्रण के साथ सुसज्जित एवं पूज्य बापूजी के श्रीविग्रह से सुशोभित रुद्राक्ष के मनकों की वैदिक राखियाँ बनायी गयी हैं।

प्राप्ति-स्थल इस पृष्ठ पर सबसे अंत में देखें। सम्पर्क : (०७९) ६१२१०७३२, रजिस्टर्ड पोस्ट से मँगवाने हेतु सम्पर्क : (०७९) ६१२१०७६९/९२२८७७६७८० ऑनलाइन प्राप्ति हेतु : www.ashramestore.com/Products-Vedic_Rakhi-26

निरापद वटी

संक्रमण से बचाये,
बुखार, कफ, खाँसी, कमजोरी भगाये

निरापद वटी संक्रमण का नाश कर तद्जन्य बुखार, कफ, खाँसी, कमजोरी आदि लक्षणों से शीघ्र राहत दिलाती है। संक्रमण के दुष्प्रभाव से श्वसन-तंत्र (Respiratory System) में होनेवाली विकृति को दूर करती है। विटामिन 'सी' के द्वारा रोगप्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है। यह बुखार की उत्कृष्ट औषधि है, साथ में रसायन (tonic) होने से बलदायक भी है। संक्रमण के प्रभाव से आनेवाली कमजोरी को दूर करने में सहायक है।

श्रेष्ठ औषधियों से बनी यह निरापद वटी संक्रमण से सुरक्षा करने में भी अत्यंत लाभदायी है। सुरक्षा हेतु २-२ गोलियाँ दिन में २ बार १५ दिन तक लें।

हरि ॐ हैंड सैनिटाइजर

घृतकुमारी (Aloe vera) व नीम युक्त

९९.९ % कीटाणुओं को तुरंत नष्ट करने में सक्षम !

बाजार, अस्पताल, ऑफिस, कार में हों या हों यातायात में... खेलकूद, खाँसने-छींकने अथवा सार्वजनिक स्थानों से आने के बाद... बीमार व्यक्ति या पालतू पशुओं को छूने के बाद... अर्थात् कहीं भी, कभी भी... साबुन और पानी की अनुपलब्धता में भी रखें हाथों को कीटाणुमुक्त।

संशमनी वटी

रोगप्रतिकारक शक्ति बढ़ाकर संक्रामक रोगों से रक्षाप्रद। सभी प्रकार के बुखार, खाँसी, सर्दी, बीमारी के बाद की कमजोरी, खून की कमी आदि में लाभदायी।

स्वादिष्ट

अमरूद चटनी

इससे भूख बढ़ती है व पाचनक्रिया अच्छी होती है। यह अमरूद के शक्तिदायक, वीर्यवर्धक तथा वायु व पित्त शामक गुणों का भी लाभ दिलाती है। सत्त्वगुण व बुद्धि वर्धक होने के साथ इसमें थकान दूर करने का भी गुण है। यह पेट की बीमारियों में विशेष लाभकारी है। इसे भोजन के साथ सेवन करें।

बेल चूर्ण

यह चूर्ण आँव-मरोड़, कमजोर पाचनशक्ति व पेट की खराबी से बार-बार होनेवाले दस्त, खूनी बवासीर एवं आँतों के घाव को दूर कर आँतों की कार्यशक्ति बढ़ाता है।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में व समितियों के सेवाकेन्द्रों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व सभीके विस्तृत लाभ आदि की जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री प्राप्त करने हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

देशवासियों में अब चरम पर है निर्दोष पूज्य बापूजी को शीघ्र जमानत दिये जाने की माँग

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2021-23
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2023)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2023)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st July 2021

श्री भूपेन्द्रसिंह चुडासमा शिक्षा मंत्री, गुज.

श्री रमनलाल एन. पाटकर वन व आदिजाति विकास राज्यमंत्री, गुज.

प्रो. वर्षा गायकवाड़, शिक्षामंत्री, महा.

श्री विष्णु दत्त शर्मा भाजपा प्रदेशाध्यक्ष एवं सांसद खजुराहो (म.प्र.)

श्री लक्ष्मीनारायण चौधरी, दुग्ध विकास, पशुधन एवं मत्स्य विभाग मंत्री (उ.प्र.)

श्री सुंदर शाम अरोरा उद्योग व वाणिज्य मंत्री, पंजाब

श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर, ऊर्जामंत्री, म.प्र.

श्री दिलीप घोष भाजपा प्रदेशाध्यक्ष एवं सांसद मेदिनीपुर (प. बंगाल)

श्री बृजेन्द्रप्रताप सिंह, खनिज साधन व श्रम मंत्री, म.प्र.

श्री हरीश द्विवेदी, राष्ट्रीय मंत्री, भाजपा एवं सांसद, बस्ती (उ.प्र.)

श्री हिरण्मय चट्टोपाध्याय विधायक, खड़गपुर (प. बंगाल) एवं फिल्म अभिनेता

सांसद व उनके क्षेत्र

साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर, भोपाल

श्री हसमुखभाई पटेल अहमदाबाद (पूर्व)

श्री दुर्गादास उइके, बैतूल (म.प्र.)

श्री महेन्द्र सिंह सोलंकी, देवास (म.प्र.)

श्री कौशल किशोर, मोहनलाल गंज-लखनऊ

श्री हेमंत गोडसे, नाशिक

श्री संतोष पांडेय, राजनांदगांव (छ.ग.)

श्री सुनील सोनी, रायपुर (छ.ग.)

विधायक व उनके क्षेत्र

श्री राजेन्द्र शुक्ल, रीवा (म.प्र.)

श्री चेतन तुपे हड़पसर-पुणे

श्री मोहनभाई ढोडिया, महुआ, जि. सूरत

श्री राजकुमार गोड़, श्रीगंगानगर (राज.)

श्री कुंवरजी कोठार सारंगपुर, जि. राजगढ़ (म.प्र.)

श्री देवेन्द्र वर्मा, खंडवा (म.प्र.)

डॉ. प्रेमपाल सिंह धनगर टूंडला, जि. फिरोजाबाद (उ.प्र.)

श्री दिलीपसिंह परिहार, नीमच (म.प्र.)

श्री लाखाभाई सागठीया राजकोट (ग्राम्य)

श्री रवि राणा, बडनेरा, जि. अमरावती (महा.)

श्री नारायण चंदेल, जांजगीर चाम्पा (छ.ग.)

श्रीकांचना यन्नम महापौर, सोलापुर (महा.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं । अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें ।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें ।

डाउनलोड करें "Rishi Prasad" व "Rishi Darshan" Apps - Google play Store से।